International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.10 No.1 Sept – Oct 2022

पुस्तकालय विज्ञान के पितामह : डॉ. एस. आर. रंगानाथन (भारत के संदर्भ मे)

श्रीमति कांति सिंह काठेड
पुस्तकालयाध्यक्ष स्वामी विवेकानंद शासकीय वाणिज्य महाविद्यालय, रतलाम
Corresponding Author- **श्रीमति कांति सिंह काठेड**
Email id: kantikathed@gmail.com

डॉ. एस.आर.रंगानाथन (पुस्तकालय विज्ञान के पितामह)

परिचय :

डॉ. एस. आर. रंगानाथन (शियाली रामामृत रंगानाथन) भारत के महान गणितज्ञ तथा पुस्तकालय जगत के जनक थे। पुस्तकालय विज्ञान को विशेष स्थान प्रदान करने एवं इसका प्रसार प्रचार करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

आप लेखक, अकादमिक, गणितज्ञ और पुस्तकालय अध्यक्ष भी रहे। डॉ. रंगानाथन का जन्म १२ अगस्त १८९२ को तामिलनाडू क तंजोरुर जिले के शियाली, मद्रास वर्तमान में चेन्नई में हुआ था। ये रामामृत अय्यर और सीतलक्ष्मी की संतान थे।

शिक्षा :

रंगानाथन की शिक्षा शियाली के हिन्दू हाई स्कूल, मद्रास टीचर्स कालेज, सइदापेट, १९१३ से १९१६ में क्रिश्चियन कॉलेज से गणित में बी.ए. तथा एम.ए. की उपाधी प्राप्त की थी। वर्ष १९१७ में गवर्मेंट कालेज, कोयंबटूर और वर्ष १९२१ - २३ के दौरान प्रसीडेन्सी कालेज, मद्रास विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य किया। १९२४ में उन्हे मद्रास विश्वविद्यालय का पहला पुस्तकालयाध्यक्ष बनाया गया। और इस पद की योग्यता हासिल करने के लिये वे इंग्लेंड,यूनिवर्सिटी कालेज, लंदन में अध्ययन करने के लिये गये। वर्ष १९२५ से मद्रास में उन्होने यह कार्य पूरी लगन से शूरु किया और १९४४ तक इस पद पर बने रहे। वर्ष १९४५ - ४७ के दौरान उन्होने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में पुस्तकालयाध्यक्ष और पुस्तकालय विज्ञान के प्राध्यपक के रुप में कार्य कियां इसके बाद १९४७ - ५४ के दौरान उन्होने दिल्ली विश्वविद्यालय में पढाने का कार्य किया। वर्ष १९५४ - ५७ के दौरान वे ज्यूरिख, स्विजरलैंड में शोध और लेखन में व्यस्त रहें। इसके बाद वे भारत लौट आये और १९५९ तक विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जेन में अतिथि प्राध्यापक के रुप में कार्य किया। वर्ष १९६२ में उन्होने बंगलोर में प्रलेखन अनुसंधान एवं प्रशिक्षाण केन्द्र स्थापित किया और इसके प्रमुख बने और जीवन पर्यनत इससे जुडे रहे। १९६५ में भारत सरकार ने उन्हे

पुस्तकालय विज्ञान में राष्ट्रीय शोध प्राध्यापक की उपाधि से सम्मानित किया।

डॉ रंगानाथन का योगदान :-

डॉ रंगानाथन ने पुस्तकालय विज्ञान को कई उचाईयो तक पहूँचाया। उनके द्वारा कुछ प्रमुख पुस्तको का प्रकाशन किया गया। वे निम्न प्रकार है :-

1- Five Laws of Library Science (1931)
2- Classified Catalogue Code (1934)
3- Prologema to Library Classification (1937)
4- Theory of Library Catalogue (1938)
5- Element of Library Classification (1945)
6- Classification and International Documentation (1948)
7- Classification and Communication (1991)
8- Headings and Canines (1955)

डॉ रंगानाथन की महत्वपूर्ण सेवायें :-

वर्ष १९२४ के पूर्व भारत में ग्रंथालय व्यवसाय को पुस्तकें संग्रहित करके रखने का स्थान माना जाता था। सन १९२४ में डॉ रंगानाथन मद्रास विश्वविद्यालय में प्रथम पुस्तकालयाध्यक्ष नियुक्त किये गये। इन्होने २५ वर्षो की कडी मेहनत से ग्रंथालय को ग्रंथालय विज्ञान के रुप में परिवर्तित किया। इन्होने अपने पुस्तकालय व्यवसाय के ४८ वर्षो के दौरान पुस्तकालय विज्ञान के लिये विशेष भूमिका निभाई। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने डॉ. रंगानाथन को उनके ७१वें जन्म वर्षगांठ के अवसर पर बधाई देते हुये लिखा कि डॉ. रंगानाथन ने न केवल मद्रास विश्वविद्यालय ग्रंथालय को संगठित किया और अपने को एक मौलिक विचारक की तरह प्रसिद्व किया। अपितु संपूर्ण रुप से देश में ग्रंथालय चेतना उत्पन्न करने में साधक रहे। विगत ४० वर्षो के उनके कार्य और शिक्षा का ही परिणाम है भारत में ग्रंथालय विज्ञान तथा ग्रंथालय व्यसाय उचित प्रतिष्ठा प्राप्त कर सका।

डॉ रंगानाथन ने अत्यधिक सृजनात्मक उत्साह के साथ कार्य किया। उन्होने ग्रंथालय विज्ञान के सभी क्षेत्रो में ५० से अधिक ग्रंथ तथा लगभग २००० शोधपत्र लिखा। इन्होने जन ग्रंथालय विधेयक का मसौदा (प्रारुप) तैयार किया और राष्ट्रीय तथा अंतराष्ट्रीय क्रियाकलापो को प्रोत्साहित किया तथा सहयोग दिया। डॉ रंगानाथन की मुख्य पुस्तक पुस्तकालय विज्ञान के पॉच सूत्र (थ्पअम र्स्ंूे वि स्पइतंतल ैबपमदबम . १९३१) पुस्तकालय के लिये पॉच सूत्र लागू किये। इस पुस्तक की सहायता से पुस्तकालयो को संचालित करने में सहयोग प्राप्त हुआ। पुस्तकालय विज्ञान के पॉच सूत्र निम्न है :-

प्रथम सूत्र : पुस्तके उपयोग कि लिये हैं ; ठववो ।तम वित नेमद्ध

द्वितीय सूत्र : प्रत्येक पाठक को उसकी पुस्तक ;Every reader his / her Book)

तृतीय सूत्र : प्रत्येक पुस्तक को उसका पाठक ;Every books its reader)

चतृर्थ सूत्र : पाठकों के समय की बचत ;Save the time of reader))

पंचम सूत्र : पुस्तकालय एक वर्धनशील संस्था है ;Library is a growing organization)

इन सभी सूत्रो का उपयोग करके पुस्तकालयों का संचालन व्यवस्थित रुप से किया जा रहा है। डॉ रंगानाथन मे भारत में पुस्तकालय अधिनियम तैयार करने की दिशा में सर्वप्रथम प्रयास किया था। उन्होने सन १९३० में वाराणसी में आयोजित अखिल भारतीय एशिया शैक्षाणिक सम्मेलन ;।सस प्दकपं म्कनबंजपवद ब्वदमितमदबम्द्ध में आदर्श पुस्तकालय अधिनियम का प्रारुप प्रस्तुत किया था। इस नियम के तहत पुस्तकालय के लिये कुछ नियम कानून लागू किये गये थे। इन अधिनियम के माध्यम से पुस्तकालय के लिये वित्तीय प्रबंध के साथ साथ ढांचागत सुविधाओं को विकसित किया जाता है।

डॉ. रंगानाथन ने वर्गीकरण ;ब्सेंपपिबंजपवदद्धए सूचीकरण ;ब्ंजंसवनहपदहद्ध, प्रबंध ;डंदंहमउमदजद्ध और अनुक्रमणी करण ;प्दकमगपदहद्ध के क्षेत्र में अपना बहुत अधिक योगदान दिया। डॉ. रंगानाथन की ब्वसवद ब्सेंपपिबंजपवद दृ १९३३ में मद्रास से प्रकाशित हुई। ब्वसवद ब्सेंपपिबंजपवद को भारत के साथ साथ विश्व भर में व्यापक रुप से इस्तेमाल किया जाता है।

डॉ. रंगानाथन ने सूचीकरण पर भी बहुत अधिक कार्य किया। सूचीकरण ग्रथालय विज्ञान की एक प्रमुख शाखा है। डॉ. रंगानाथन द्वारा लिखित पुस्तक क्लासीफाईड केटेलॉग का वर्ष १९३४ में भी प्रकाशन किया। क्लासीफाईड कोंड के पॉच संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। प्रथम संस्करण - १९३४, द्वितिय संस्करण - १९४५, तृतीय संस्करण -१९५४, चौथा संस्करण - १९५८, पॉचवा संस्करण - १९६४, छॅटवा संस्करण १९७४ और अंतिम संस्करण - १९८७ में संशोधित एवं परिवर्तित रुप में प्रकाशित किया गया।

पुरुस्कार एवं सम्मान :- भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने डॉ. रंगानाथन के ७१वें जन्म वर्षगॉठ के अवसर पर बधाई देते हुये लिखा डॉ. रंगानाथन ने न केवल मद्रास विश्वविद्यालय को संगठित किया बल्कि अपने को एक मौलिक विचारक की तरह प्रसिद्ध किया अपितु संपूर्ण रुप से देश में पुस्तकालय चेतना उत्पन्न करने में साधक रहे। भारत सरकार ने डॉ. रंगानाथन को राव साहिब पुरुस्कार से सम्मानित किया और १९५७ में पुस्तकालय विज्ञान में उनके बहूमूल्य योगदान के लिये पदम्श्री से नवाजा । डॉ. रंगानाथन को भारत सरकार ने १९६५ में पुस्तकालय विज्ञान के राष्ट्रीय अनुसंधान प्रोफेसर के रुप में नामित किया। वे योजना आयोग और भारत सरकार के विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सलाहकार भी रहे। डॉ. रंगानाथन हमारे देश में पुस्तकालय विज्ञान की वास्तविक आवश्यकता की पहचान करने वाले पहले व्यक्ति के रुप में स्वीकार किये जाते हैं। अतः इस क्षेत्र में उनके योगदान को याद

करते हुये देश में प्रतिवर्ष १२ अगस्त को लायब्रेरियन डे के रुप में मनाया जाता है। पुस्तकालय विज्ञान को ऊचाईयों तक पहॅचाने में सक्रिय योगदान दिया था।

डॉ. रंगानाथन भारत में पुस्तकालय विज्ञान के जनक के रुप में जाने जाते हैं। इन्होने भारतीय पुस्तकालयों को नई दिशा प्रदान की ।पुस्तकालयों के सभी क्षेत्रो में जैसे सूचीकरण, वर्गीकरण संदर्भ सेवा, पुस्तकालय अधिनियम, पुस्तकालय संचालन, प्रबंधन आदि सभी क्षेत्रो का अध्ययन करके पुस्तकालयों को सुचारु रुप दिया। इन्होने अपना पूरा जीवन पुस्तकालय को समर्पित कर दिया था। इनकी मृत्यू २७ सिंतबर १९७२ को ८० वर्ष की उम्र में बैंगलोर में हुई।

संदर्भः

1. http://hi.m.wikipedia.org
2. http://www.library science.in
3. http://www.bharat discovery.org
4. http://assets.vmoll.ac.in
5. http://www.britannica.com